

औद्योगीकरण का युग

औद्योगीकरण :-

- यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से वस्तुओं के विनिर्माण आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो जाती है।

औद्योगीकरण का युग :-

- जिस युग में हस्तनिर्मित वस्तुओं बनाना कम हुई और फैक्ट्री, मशीन एवं तकनीक का विकास हुआ उसे औद्योगीकरण का युग कहते हैं।
- 1760 से 1840 तक के युग को औद्योगीकरण का युग कहा जाता है।
- इसमें खेतिहर समाज औद्योगीकरण समाज में बदल गया।

पूर्व औद्योगीकरण :-

- औद्योगीकरण के पहले के काल को पूर्व औद्योगीकरण का काल कहते हैं।
- पूर्व औद्योगीकरण वह चरण था जब अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए आधुनिक कारखानों की अनुपस्थिति में बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण उत्पादन हो रहा था। यह उत्पादन फैक्ट्रियों में नहीं होता था।

- बहुत सारे इतिहासकार औद्योगिकरण के इस चरण को आदि - औद्योगिकरण (Proto-industrialisation) का नाम देते हैं।
- इस आदि-औद्योगिक प्रणाली पर व्यापारियों का नियंत्रण था और वस्तुओं का उत्पादन कारखानों में नहीं बल्कि अपने पारिवारिक खेतों में काम करने वाले बड़ी संख्या में उत्पादकों द्वारा किया जाता था।
- इस अवधि में गाँवों में सम्मान बनते थे जिन्हें बाहर के व्यापारी खरीदते थे।

औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत :-

- अठारवीं और अठारहवीं शताब्दी में विप्लव व्यापार के विस्तार और दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना के कारण चीजों की माँग बढ़ने लगी थी। इस माँग को पूरा करने के लिए केवल शहरों में रहते हुए उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था।
 - इसलिए यूरोपीय शहरों के औद्योगिक गाँवों की तरफ रुख करने लगे थे। वे किसानों और कारीगरों को पैसा देते थे और उनसे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए उत्पादन करवाते थे।
 - गाँवों में गरीब किसान और कारीगर औद्योगिक गाँवों के लिए काम करने लगे। जैसे कि -
- स्टैपल :- ऐसा व्यक्ति जो देशों के हिसाब से उन को 'स्टैपल' कहता है या होता है।

फुलर :- ऐसा व्यक्ति जो 'फुल' कपड़ा
थानी पुनर्निर्माण के सहारे कपड़े
को समेटता है।

कार्डिंग :- वह प्रक्रिया जिसमें कपास या
अन्य आदि रेशों को कटाई
के लिए तैयार किया जाता है।

- इंग्लैंड के कपड़ा व्यवसायी स्टोप्लेस (Staples)
से अन्य खरीदते थे और उसे
भूत कालों वाली के पास पहुँचा
देते थे। इससे जो धागा मिलता था
उसे बुनकरों, फुलर्स (Fullers) और रंगरानों
के पास ले जाया जाता था। लंदन
में कपड़ा की फिनिशिंग होती थी।
इसके बाद निर्यातक आपारी कपड़े को
अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बेच देते थे।

कारखानों की शुरुआत :-

- सबसे पहले इंग्लैंड में कारखानों 1730 के
दशक में बनना शुरू हुए। अठारहवीं
सदी के आखिर तक पूरे इंग्लैंड में
जगह-जगह कारखाने दिखने लगे।
- औद्योगिकरण की शुरुआत मुख्य रूप से
सूती उद्योग में हुई।
- उन्नीसवीं सदी के आखिर में कपास
के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई।
1760 में ब्रिटेन में 2.5 मिलियन पाउंड
का कपास आयात होता था। 1787 तक
यह मात्र बढ़कर 22 मिलियन पाउंड हो
गया।

71
इसे संगठन बनाने वाले कारक : इलायक की प्रक्रिया में आविष्कारों और परिवर्तनों की श्रृंखला है। जैसे कि :-

अठारहवीं सदी में कई ऐसे आविष्कार हुए जिन्होंने उत्पादन प्रक्रिया (कार्दिंग, स्पिन्निंग व कटाई, और लोपेटने) के हर चरण की कुशलता बढ़ा दी।

रिचर्ड आर्किराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा सामने रखी।

कारखानों के खुलने से होने वाले लाभ :-

- श्रमिकों की कार्यकुशलता बढ़ गई।
- अब कई मशीनों की सहायता से प्रति श्रमिक अधिक मात्रा में और बेहतर उत्पाद बनने लगे।
- कारखानों से श्रमिकों की निगरानी और उनसे काम लेना अधिक आसान हो गया।

औद्योगिक परिवर्तन की राह :-

पहला चरण :- तेजी से बढ़ता हुआ कपास

उद्योग 1840 के दशक तक औद्योगिकरण के पहले चरण में सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था। इसके बाद लोहा और स्टील उद्योग आगे निकल गए। 1840 के दशक से इंग्लैंड में और 1860 के दशक से उसके अनिवेशी में रेलवे का विस्तार होने लगा था।

दूसरा चरण :-

नए उद्योग परंपरागत उद्योगों की इतनी आसानी से दायरे में नहीं फैल सके थे। उन्नीसवीं सदी के आखिर में भी तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों की संख्या कुल मजदूरों में 20 प्रतिशत से ज्यादा नहीं थी। कापड़ा उद्योग एक गतिशील उद्योग था लेकिन उसके उत्पादन का बड़ा हिस्सा कारखानों में नहीं बल्कि घरेलू इकाइयों में होता था।

तीसरा चरण :-

परंपरागत उद्योगों में परिवर्तन की गति भाप से चलने वाले सूती और धातु उद्योगों से तब नहीं हो रही थी लेकिन ये परंपरागत उद्योग पूरी तरह ठहराव की अवस्था में भी नहीं थे। खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, पाटरी, फाँच के काम, पम्परीधन, फर्निचर और औजारों के उत्पादन जैसे बहुत सारे और-मशीनी क्षेत्रों में जो तरक्की हो रही थी वह मुख्य रूप से आयात और दूर-दूर आविष्कारों का ही परिणाम थी।

चौथा चरण :-

औद्योगिकीय बदलावों की गति धीमी थी। क्योंकि -

- उन्नीसवीं तकनीक मंदगती थी।
- मशीनें अक्सर खराब हो जाती थी और उनकी मरम्मत पर काफी खर्च आता था।

- वे उतनी अच्छी भी नहीं थी, जितना उनके आविष्कारकों और निर्माताओं का दावा था।

नए उद्योगपति परंपरागत उद्योगों को जगह क्यों नहीं ले सकें?

- औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों की संख्या कम थी।
- प्रौद्योगिकीय बदलाव की गति धीमी थी।
- मजदूर उद्योग एक प्रगतिशील उद्योग था।
- प्रौद्योगिकी काफी महंगी थी।
- उत्पादन का एक बड़ा भाग कारखानों की बजाय घरेलू उद्योग से पूरा होता था।

घाघ का श्रम और वाष्प शक्ति :-

- उस जमाने में श्रमिकों को कोई कमी नहीं होती थी। इसलिये श्रमिकों की किल्लत था अधिक पारिश्रमिक को कोई समस्या नहीं थी। इसलिये महंगी मशीनों में पूँजी लगाने की अपेक्षा श्रमिकों से काम लेना को बेहतर समझा जाता था।
- मशीन से लगे चीजें एक ही जैसी होती थीं। वे घाघ से लगे चीजों को गुणवत्ता और सुंदरता का मुकाबला नहीं कर सकती थीं। उच्च वर्ग के लोग घाघ से लगे चीजों को अधिक पसंद करते थे।
- जिन देशों में मजदूरों की कमी होती थी हैं। वहाँ उद्योगपति मशीनों का इस्तेमाल करना

14
ज्यादा पसंद करते हैं ताकि कम से कम
मजदूरों का इस्तेमाल करके वे अपना
काम चला सकें। उन्नीसवीं सदी के
अमेरिका में यह स्थिति थी।

मजदूरों की जिंदगी :-

- कुल मिलाकर मजदूरों का जीवन दयनीय था।
- श्रम की बहुतायत की वजह से नौकरियों की भारी कमी थी।
- नौकरी मिलने की संभावना थोड़ी-दोस्ती, कुन्नी-कुटुंब के जरूरत जान-पहचान पर निर्भर करती थी।
- बहुत सारे उद्योगों में मौसमी काम की वजह से कामगारों को बीच-बीच में बहुत समय तक खाली बैठना पड़ता था।
- मजदूरों की आय के वास्तविक मूल्य में भारी कमी इसलिये जारी होती थी।
- बेरोजगारी की आशंका के कारण मजदूर नयी प्रौद्योगिकी से चिढ़ते थे। जब उन उद्योग में स्पनिंग जेनी मशीन का इस्तेमाल शुरू किया गया तो सच से उन फालने वाली औरतें इस तरह की मशीनों पर हमला करने लगीं।
- 1840 के दशक के बाद रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई क्योंकि सड़कों को चौड़ा किया गया, नए रेलवे स्टेशन बनें, रेलवे लाइनों का विस्तार किया गया।

स्पेनिश जेनी :-

[75]

- एक मृत कारखाने को मशीन जो **जैम**
हरगोब द्वारा 1764 में बनाई गई थी।

स्पेनिश जेनी मशीन को विरोध :-

- उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अच्छे दौर में भी शहरों की आबादी का लगभग 10% अत्यधिक गरीब हुआ करता था।
आर्थिक मंदी के दौर में बेरोजगारी बढ़कर 35 से 75% के बीच हो जाती थी।
- बेरोजगारी को आबादी की वजह से मजदूर नई प्रौद्योगिकी से चिढ़ने लगे। जब उन उद्योग में स्पेनिश जेनी मशीन का इस्तेमाल शुरू किया गया तो मशीनों पर हमला करने लगे।

भारतीय कपड़े का युग -

मशीन उद्योग से पहले का युग :-

- अंतर्राष्ट्रीय कपड़ा बाजार में भारत के खासी और रूतूरी उत्पादों का दबका था।
- उच्च किरम का कपड़ा भारत से आर्मीनिया और फारसी मोरार पंजाब से अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य एशिया लौटा जाते थे।
- मुरत, दुमाली और मसूली पहना प्रमुख बंदरगाह थे।
- विभिन्न प्रकार के भारतीय आपारी तथा बैंकर इन आपार नेटवर्क में शामिल थे।
- दो प्रकार के आपारी थे आपूर्ति मोरार तथा निर्यात मोरार।

- 1767
- बंदरगाहों पर बड़े जहाज माविक तथा निर्यात व्यापारी दुकानों के साथ कोमत पर मौल्य भाव करते थे और आपूर्ति और बाजार से मौल्य खरीद लेते थे।

महान उद्योग के बाद का युग (1760 के बाद)

- 1750 के दशक तक भारतीय औद्योगिक के नियंत्रण वाला नेहरू के दृष्टि में लगता।
- यूरोपीय कंपनियों की ताकत बढ़ने लगी।
- भारत तथा दुगली जैसे पुराने बंदरगाह कमजोर पड़ गए।
- बम्बई (मुंबई) तथा कलकत्ता एक नए बंदरगाह के रूप में उभरे।
- भारत यूरोपीय कंपनियों द्वारा नियंत्रित होता था तथा यूरोपीय जहाजों के जरिए होता था।
- शुरुआत में भारत के कपड़ा आयात में कोई कमी नहीं। 18वीं सदी यूरोप में भी भारतीय कपड़े की भारी मांग हुई।
- ईस्ट इंडिया कंपनी आने के बाद पुनर्जागरण की स्थिति

- ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा सत्ता स्थापित करने से पहले पुनर्जागरण बेहतर स्थिति में थे क्योंकि उनका उत्पाद खरीदने वाले बहुत खरीदार थे तथा वे मौल्य भाव वाले सबसे अधिक कोमत देने वाले को अपना सामान बेच सकते थे।
- ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के बाद पुनर्जागरण की स्थिति (1760 के बाद) में निम्नलिखित परिवर्तन आए-

- भारतीय व्यापार पर ईस्ट इंडिया कम्पनी का सत्कादिकार हो गया।
- कम्पनी को माल बेचने वाले बुनकरों को अन्य शरीरों के साथ कारोबार करने पर पालन्दी लगा दी गई।
- कम्पनी ने बुनकरों पर निगरानी रखने, माल इकट्ठा करने और कपड़ों की गुणवत्ता जाँचने के लिए वेतनभोगी कर्मचारी तैनात कर दिए जिन्हें गुमास्ता कहा जाता था।
- बुनकरों को कम्पनी से मिलने वाली कीमत बहुत ही कम होती।

भारत में मैनचेस्टर का आना :-

- 1772 में ईस्ट इंडिया कम्पनी के आफसर हैनरी पटूबो ने कहा था कि "भारतीय कपड़ों की माँग कभी कम नहीं हो सकती क्योंकि युनिया के किसी और देश में इतना अच्छा माल नहीं बनता"।
- लेकिन हम देखते हैं कि अनीलनी सरी की शुरुआत में भारत के कपड़ा निर्यात में गिरावट आने लगी जो लम्बे समय तक जारी रही। 1811-12 में भारत से होने वाले निर्यात में सूती कपड़ों की हिस्सेदारी 33% थी जो 1850-51 आते आते 3% रह गई।
- सबसे क्यों हुआ ?

- जब इंग्लैंड में कपास उद्योग विकसित हुआ तो वहाँ के उद्योगपति दूसरे देशों से आने वाले आयात को लेकर पेशान दिखाई देने लगे।

1981
इंग्लैंड के उद्योगपतियों ने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयातित कपड़े पर आयात शुल्क वसूल करे जिससे मैनचेस्टर में बने कपड़े बाहरी प्रतिस्पर्धा के बिना इंग्लैंड में आराम से बिक सकें।

• दूसरी तरफ उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी पर दबाव डाला कि वह ब्रिटिश कपड़ों को भारतीय बाजारों में भी बेचे।

• अठारहवीं सदी के अन्त तक भारत में सूती कपड़ों का आयात न के बराबर था। लेकिन 1850 आते-आते कुल आयात में 31% हिस्सा सूती कपड़ों का था। 1870 के दशक तक यह हिस्सेदारी बढ़कर 50% से ऊपर चली गई।

मैनचेस्टर के आगमन से भारतीय बुनकरों के सामने आई समस्याएँ :-

• भारतीय कारखानों में उत्पादन होने लगा और बाजार मशीनों को बनी चीजों से पर गया था।

• स्थानीय बाजार में मैनचेस्टर के आयातित मालों को भारभार थी। कम लागत पर मशीनों से बने वाले आयातित कपड़ों का उत्पादन करने से कि गुणवत्ता उसका मुकाबला नहीं कर सकते थे।

• उन्हें अच्छी कपास नहीं मिल पा रही थी। जब अमेरिकी गृहयुद्ध शुरू हुआ और अमेरिका से कपास को आरत बंद हो

गई तो ब्रिटेन भारत से कच्चा माल [79]
मंगाने लगा। भारत से कच्चे कपास
के निर्यात में इस वृद्धि से उसकी
कीमत आसमान छूने लगी।

19 वीं सदी के अन्त तक भारत में फैक्ट्रियों
द्वारा उत्पादन शुरू तथा भारतीय बाजार
में मशीनी उत्पाद की बाढ़ आई।

फैक्ट्रियों का आना :-

भारत में कारखानों की शुरुआत :-

- बम्बई में पहली कापड़ा मिल 1854 में लगी और दो
साल बाद उसमें उत्पादन होने लगा। 1862 तक
वहाँ ऐसी चार मिलें काम कर रही थीं।
- बंगाल (रिवाय) में देश की पहली जूट मिल 1855 में
और दूसरी 7 साल बाद 1862 में चालू
हुई।
- कानपुर में 1860 के दशक में एल्लियन मिल
की शुरुआत हुई।
- अहमदाबाद में भी इसी अवधि में पहली
कापड़ा मिल चालू हुई।
- 1874 में मद्रास में भी पहली काताई और
जुनाई मिल शुरू गई।

प्राथमिक उद्योग :-

- देश के विभिन्न भागों में तरह-तरह के
लोग उद्योग लगा रहे थे।
- बहुत सारे भावसायिक समूहों का इतिहास चीन
के साथ व्यापार जमाने से चला आ
रहा था।

- अछाहटनी मद्य के आघात से हो अंग्रेज भारतीय आफीन का चीन को निर्यात करने लगे थे । उसके बदले में वे चीन से चाय खरीदते थे जो इंग्लैंड जाती थी ।
- इस आघात से बहुत भार भारतीय कारोबारी सहायक को हैसियत से पहुँच गए थे । वे पैसा उपलब्ध कराते थे, आपूर्ति सुनिश्चित कराते थे और माल को जहाजों में लोड कर रवाना करते थे ।
- आघात से पैसा कमजोर के बाद उनमें से कुछ अवसायी भारत में औद्योगिक उद्यम स्थापित करने लगे । जैसे :
 - i) बंगाल में धारकाजय टैगोर ने चीन के साथ आघात में खूब पैसा कमाया और वे उद्योगों में निवेश करने लगे ।
 - 2) लम्बर्ड में डिन्शॉ पेटिट और जे. एन टाय ।
 - 3) मेठ हुकुमचन्द ने कलकत्ता में 1917 में पहली बूट मिल लगाई ।
 - 4) जी. डी. बिड़वा ने भी यही किया ।
 - 5) मद्रास के कुछ मेशगर जो लम्बि, मध्य पूर्व तथा पूर्व अफ्रीका से आघात करते थे । उन्होंने भी फैक्ट्रियाँ लगा लीं ।
 - 6) कुछ वाणिज्यिक समूह जो भारत के भीतर ही आघात करते थे । उन्होंने भी फैक्ट्रियाँ लगा लीं ।

मजदूर कहां से आए :-

- ज्यादातर मजदूर आसपास के जिलों से आते थे। उदाहरण के लिए बम्बई के मुंबई काण्डा जिले में काम करने वाले ज्यादातर मजदूर पावन के प्लागिरी जिले से आते थे।
- जिन किसानों कारीगरों को गाँव में काम नहीं मिलता था वे औद्योगिक केंद्रों की तरफ जाते लगते थे।

19वीं सदी में भारतीय मजदूरों की दशा :-

- 1901 में भारतीय कैदियों में 5,84,000 मजदूर काम करते थे।
- 1946 में यह संख्या बढ़कर 24,36,000 हो चुकी थी।
- ज्यादातर मजदूर अस्थायी तौर पर रहे जाते थे।
- फसलों की कटाई के समय गाँव छोड़ जाते थे।
- जोकरी मिलना कठिन था।
- जाँबट मजदूरों की जिनगी को पूरी तरह से नियंत्रित करते थे।

जाँबट कौन थे ?

- उद्योगपतियों ने मजदूरों को धर्ती के लिए जाँबट रखा था।
- जाँबट कोई पुराना विवरण कर्मचारी होता था।

- वह गाँव से लोगों को बसा था।
- काम का भरोसा देना तथा शहर में बसने के लिए मदद देना।
- जंगल मदद के बड़े पैके व तोहफों को आँक करके लगाना।

औद्योगिक विकास का अनुशासन :-

- भारत में औद्योगिक उत्पादन पर वर्चस्व रखने वाली यूरोपीय प्रबन्धकीय रुजेंसियों की कुछ बातें तरह के उत्पादों में ही दिख चुकी थी। उन्होंने औपनिवेशिक सरकार से सस्ती कीमत पर जमीन लेकर पाय व काँपी के लगान लगाए और खनन, नील व जूट व्यवसाय में पैके का निवेश किया। इनमें से ज्यादातर ऐसे उत्पाद थे जिनकी भारत में बिक्री के लिए नहीं बल्कि मुख्य रूप से निर्यात के लिए आवश्यकता थी।
- भारतीय व्यवसायियों ने वे उद्योग लगाए (19 वीं सदी के आखिर में) जो बेनबेस्ट उत्पाद से प्रतिस्पर्धा नहीं करते थे। उदाहरण के लिए धागा - जो कि आयात नहीं किया जाता था तो कपड़े की बजाय धागे का उत्पादन किया गया।
- 20 वीं सदी के पहले दशक में भारत में औद्योगिकरण का हरी बदल गया। स्वदेशी आंदोलन लोगों की निदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया।

औद्योगिक समूह अपने सामूहिक हितों [83]
रक्षा के लिए संगठित हो गए और
उन्होंने आयात शुल्क बढ़ाने तथा अन्य
रियायतें देने के लिए सरकार पर
दबाव डाला।

भारतीय मजदूर मिलों में बनने वाले धागे
का भारत के हथकरघा बुनकर इस्तेमाल
करते थे या उन्हें चीन को निर्यात
कर दिया जाता था।

1906 के बाद चीन भेजे जाने वाले
भारतीय धागे के निर्यात में भी
कमी आने लगी थी। चीनी बजारों
में चीन और जापान को मिलों के
उत्पाद हा गए थे।

इस वजह से भारत में कापड़ा उत्पादन
शुरू हुआ। 1900-1912 के बीच लूरी कापड़
का उत्पादन दुगुना हो गया।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारत में औद्योगिक
उत्पादन को तेजी से बढ़ाया। नई
फैक्ट्रियों की स्थापना की गई क्योंकि
की गई ब्या ब्रिटिश मिलें युद्ध के
लिए उत्पादन में व्यस्त थी।

युद्ध के बाद भारतीय बाजार में मैनचेस्टर
को पहले वाले दमियत कमी हासिल
नहीं हो पायी।

आधुनिकीकरण न कर पाने और अमेरिका,
जर्मनी व जापान के मुकामों कमजोर
जाने के कारण ब्रिटेन की अर्थसमस्या
परमरा गई थी।

अनिवेशों में निरक्षर उत्पादों को दहाकूट
 रधानीय उद्योगपतियों ने धरेल बाजारों
 पर कब्जा कर लिया और धीरे-
 धीरे अपनी स्थिति अजलूत बना ली।
लघु उद्योगों की बहुतायत :-

- युद्ध के बाद फैक्ट्री उद्योगों में लगातार
 इजाफा हुआ लेकिन अर्थबलरूपा में
 विशाल उद्योगों का हिस्सा लघुत होता
 था। लगभग 67% छोटे उद्योग बंगाल
 और बम्बई में थे।
- देश के बाकी हिस्सों में लघु उद्योग
 का लोहावाला था। कामगारों का रुक
 बहुत होता हिस्सा हो रजिस्टर्ड
 कंपनियों में काम करता था। 1911
 में यह बीअर 5% था और 1931
 में 10%।
- बीसवीं सदी में दाय से होने वाले
 उत्पादों में इजाफा हुआ। दयकरदा
 उद्योग में लोगों ने नई टेक्नालोजी
 को अपनाया। नुनकरों ने अपने
 कारखानों में प्लाई शटल का इस्तेमाल
 शुरू किया।
- 1941 और 1942 भारत के 35% से
 अधिक दयकरदों में प्लाई शटल
 लग चुका था। त्रावणकोर, मद्रास,
बैलूर, कोचिन और बंगाल जैसे
 मुख्य क्षेत्रों में तो 70 से 80% दयकरदों
 में प्लाई शटल लगे हुए थे।
- इसके अलावा और भी कई नये सुधार
 हुए जिससे दयकरदा के क्षेत्र में उत्पादन

क्षमता बढ़ गई थी,

[85]

प्लाई वाटर :

रस्सी और पुलियों के जरिए चलने वाला एक यांत्रिक औजार है जिसका इस्तेमाल किया जाता है।

वस्तुओं के लिए बाजार :-

जब नयी चीजें बनती हैं तो लोगों को उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित भी करना पड़ता है। लोगों को लगाना चाहिए कि उन्हें उस उत्पाद की जरूरत है।

इसके लिए क्या किया गया ?

ग्राहकों को रिझाने के लिए उत्पादक कई तरीके अपनाते थे। ग्राहक को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन रूक जाना माना तरीका है।

इन्नीसली भदों के उत्तरार्ध तक उत्पादकों ने अपने को बशहूर बनाने के लिए कैलेंडर बाँटने भी शुरू कर दिये थे।

मैनचेस्टर के उत्पादक अपने लेबल पर उत्पादन का स्थान जरूर दिखाते थे। मैसे इन मैनचेस्टर का लेबल कालिदा का प्रतीक माना जाता था। इन लेबल पर सुन्दर चित्र भी होते थे। इन चित्रों में अक्सर भारतीय देवी देवताओं की तस्वीर होती थी। स्थानीय लोगों से तात्पर्य बनाने का यह एक अच्छा तरीका था।

• लिपि अखबार या पत्रिका को दुबना में रफ़ कैलेंडर की शैल्फ भाइफ लगनी होती है। यह पूरे साल तक बांड रिमाइंड का काम करता था।

• भारत के उत्पादक अपने विज्ञानों में अवसर राष्ट्रवादी मदेशों को प्रमुखता देते थे। ताकि अपने ब्राह्मों से मोक्ष लेते पर जुड़ सकें।